गुजरात राज्य संस्कृत बोर्ड, शिक्षा संकाय गुजरात सरकार

एवं

योगविद्या विभाग,शिक्षा संकाय(IASE), गूजरात विद्यापीठ,अहमदाबाद

द्वारा अखिल भारतीय संस्कृत समारोह योजना अंतर्गत आयोजित द्वि - दिवसीय राष्ट्रिय परिसंवाद

संस्कृत समारोह :
महर्षि पतंजलि भारतीय ज्ञान परम्परा और सांस्कृतिक चेतना का समन्वित अध्ययन

दिनांक-28-29 मार्च, 2026

स्थान

योगविद्या विभाग, शिक्षा संकाय (IASE)

गूजरात विद्यापीठ, आश्रम मार्ग, अहमदाबाद, गुजरात

प्रस्तावना

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां
मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां
पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि॥

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है, जिसकी आधारशिला वेद, उपनिषद और योग परम्परा में निहित है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे आदर्श इसके मूल में मानव कल्याण और विश्वबंधुत्व की भावना को स्थापित करते हैं। इस गौरवशाली परम्परा के प्रमुख स्तंभों में महर्षि पतंजलि का विशेष स्थान है। उनके अमूल्य ग्रंथ योगसूत्र ने योग को एक सुव्यवस्थित दर्शन के रूप में प्रस्तुत कर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन का मार्ग दिखाया। अष्टांग योग की साधना आज भी जीवन को अनुशासित, स्वस्थ और संतुलित बनाने में मार्गदर्शक है। इन्हीं आदर्शों को केंद्र में रखते हुए "अखिल भारतीय संस्कृत समारोह" का आयोजन किया जा रहा है। यह समारोह भारतीय संस्कृति और योग की महत्ता पर चिंतन-मनन का एक सशक्त मंच है, जहाँ संस्कृत विद्वान, योग विशेषज्ञ, शोधकर्ता एवं विद्यार्थी एकत्र होकर परम्परा के संरक्षण और समकालीन संदर्भ में उसके पुनर्मूल्यांकन पर विचार-विमर्श करेंगे।

गूजरात विद्यापीठ का परिचय

गूजरात विद्यापीठ एक यूजीसी द्वारा अनुदानित डीम्ड विश्वविद्यालय है, जिसकी स्थापना महात्मा गांधी ने 18 अक्टूबर 1920 को असहयोग आंदोलन के ऐतिहासिक कालखंड में 'राष्ट्रीय विद्यापीठ' के रूप में की थी। इसकी स्थापना का मूल उद्देश्य ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना था, जो स्वदेशी मूल्यों, भारतीय संस्कृति और आत्मनिर्भरता की भावना पर आधारित हो। यह संस्थान सत्य, अहिंसा, स्वावलंबन, श्रम-प्रतिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गांधीवादी आदर्शों को अपने शैक्षिक दर्शन और कार्यप्रणाली के केंद्र में स्थापित करता है। महात्मा गांधी इसके आजीवन कुलपति रहे और उनके मार्गदर्शन में विद्यापीठ ने शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण का प्रभावी माध्यम बनाने की दिशा में सुदृढ़ आधार प्राप्त किया। गूजरात विद्यापीठ नर्सरी से लेकर डॉक्टरेट स्तर तक समन्वित, मूल्याधारित एवं जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान करता है। यहाँ शिक्षा, सामाजिक विज्ञान तथा अन्य संबद्ध विषयों में विविध शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित होते हैं, जिनमें ज्ञान के साथ-साथ चरित्र-निर्माण और सामाजिक चेतना पर विशेष बल दिया जाता है।इस विश्वविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य ऐसे व्यक्तित्वों का निर्माण करना है, जो नैतिक मूल्यों से संपन्न, सांस्कृतिक रूप से जागरूक, बौद्धिक रूप से सक्षम तथा सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध हों। गांधीवादी दर्शन से प्रेरित होकर यह संस्थान राष्ट्रीय पुनर्निर्माण, ग्राम स्वराज, सामुदायिक विकास और रचनात्मक सामाजिक परिवर्तन के लिए समर्पित नेतृत्व का सृजन करने हेतु निरंतर प्रयत्नशील है।

गुजरात राज्य संस्कृत बोर्ड का परिचय

गूजरात राज्य संस्कृत बोर्ड का नूतन संशोधित प्रतीक चिन्ह बोर्ड के दिव्य ध्येय और व्यापक कार्यों का प्रतीक है, जिसका ध्येय वाक्य ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यम भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्वों को अभिव्यक्त करता है| संस्कृत वह दिव्य भाषा है, इसके आधार पर भारत की संस्कृति, नैतिकता और ज्ञान विज्ञान की परंपरा विकसित हुई है| गूजरात राज्य संस्कृत बोर्ड द्वारा संस्कृत भाषा के व्यापक प्रचार प्रसार एवं संवर्धन के उद्देश्य से योजनापंच्चकम्प का शुभारंभ किया गया है| यह पांच योजनाओं का समन्वित प्रयास है, जिसके माध्यम से संस्कृत भाषा को शिक्षा परिवार और समाज की प्रत्येक स्तर तक पहुंचाने का संकल्प लिया गया है| श्रीमद् भागवत गीता योजना एवं "शतसुभाषित कन्ठपाठ योजना" के द्वारा घर-घर में श्लोक, सूक्ति और संस्कृत साहित्य का संस्कार विकसित किया जाएगा| "संस्कृत प्रोत्साहन योजना" माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर संस्कृत अध्ययन को सशक्त बनाएगी "संस्कृत सप्ताह उत्सव योजना" के अंतर्गत सभी जिलों में संस्कृत दिवस को उत्सव के रूप में मनाकर जन-जन में भाषा की वृद्धि जागरूकता उत्पन्न की जाएगी वहीं "संस्कृत संवर्धन सहायता योजना" उच्च शिक्षा एवं शोध क्षेत्र में संस्कृत के विकास को गति प्रदान करेगी|

योग विभाग का परिचय

गूजरात विद्यापीठ का योग विभाग, जिसकी स्थापना वर्ष 1995 में हुई, गुजरात में योग शिक्षा, अनुसंधान एवं सामाजिक प्रसार का एक प्रतिष्ठित एवं अग्रणी केंद्र है। इसकी स्थापना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा समर्थित राष्ट्रीय पहल के अंतर्गत तथा कैवल्य धाम योग इंस्टिट्यूट, लोनावला के सहयोग से की गई। यह विभाग पारंपरिक योगविद्या की प्रामाणिकता और आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान की दृष्टि का सशक्त समन्वय प्रस्तुत करता है।

गांधीवादी आदर्शों तथा कोठारीकमीशन द्वारा प्रतिपादित समग्र एवं मूल्याधारित शिक्षा की संकल्पना से प्रेरित यह विभाग डिप्लोमा से लेकर पीएच.डी. स्तर तक सुव्यवस्थित, अनुसंधानपरक एवं जीवनोपयोगी शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित करता है। इसके अतिरिक्त, विभाग योग परामर्श, चिकित्सकीय योग सेवाएँ तथा स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों को लाभान्वित करता है।

पिछले 25 से अधिक वर्षों की शैक्षणिक उत्कृष्टता, शोधपरक उपलब्धियों और व्यापक सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से विभाग ने शिक्षा, प्रशिक्षण, उपचार एवं जन-जागरूकता अभियानों द्वारा 70,000 से अधिक व्यक्तियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का उल्लेखनीय कार्य किया है। यह विभाग योग को केवल एक अभ्यास नहीं, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और सामाजिक कल्याण के प्रभावी एवं समग्र साधन के रूप में स्थापित करने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है।

समारोह के उद्देश्य

1. भारतीय संस्कृति के मूल आदर्शों एवं जीवन-मूल्यों का संरक्षण और संवर्धन करना।
2. महर्षि पतंजलि के योग-दर्शन तथा योगसूत्र के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करना।
3. योग को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन के समग्र साधन के रूप में स्थापित करना।
4. संस्कृत भाषा, साहित्य और भारतीय दार्शनिक परम्परा के गहन अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
5. संस्कृत विद्वानों, योग विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं एवं विद्यार्थियों के लिए संवाद और शोध-विमर्श का सशक्त मंच प्रदान करना।
6. भारतीय परम्पराओं का समकालीन संदर्भ में पुनर्मूल्यांकन कर उन्हें नई पीढ़ी से जोड़ना।
7. सांस्कृतिक एकता, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करना।

अपेक्षित प्रतिफल

इस समारोह के माध्यम से भारतीय संस्कृति और योग-दर्शन के प्रति गहन समझ एवं जागरूकता में वृद्धि होगी। महर्षि पतंजलि के सिद्धांतों तथा योगसूत्र की शिक्षाओं को व्यावहारिक जीवन में अपनाने की प्रेरणा मिलेगी, जिससे प्रतिभागियों में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा। साथ ही संस्कृत, योग और भारतीय दर्शन के क्षेत्र में नवीन शोध एवं शैक्षणिक संवाद को प्रोत्साहन प्राप्त होगा तथा विद्वानों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के बीच सहयोग एवं नेटवर्किंग सुदृढ़ होगी। यह आयोजन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण को बल प्रदान करते हुए युवा पीढ़ी में अपनी परम्परा के प्रति गर्व और जिम्मेदारी की भावना का विकास करेगा तथा समाज में नैतिकता, अनुशासन और सांस्कृतिक एकता को सशक्त बनाएगा।

शोधकार्य के उपविषय

निम्नलिखित शोधपत्र विषय महर्षि पतंजलि के दर्शन को आधार बनाकर तैयार किए गए हैं, जिनमें संस्कृत, योग और आयुर्वेद—तीनों क्षेत्रों के विद्यार्थी सहभागी हो सकते हैं:

- महर्षि पतंजलि का भारतीय ज्ञान-परम्परा में स्थान और योगदान
- योगसूत्र में चित्तवृत्ति निरोध की अवधारणा और उसका सांस्कृतिक महत्व
- महर्षि पतंजलि के त्रिविध योगदान (व्याकरण, योग, आयुर्वेद) का तुलनात्मक अध्ययन
- पतंजलि का दर्शन और भारतीय संस्कृति में अनुशासन की परंपरा
- पतंजलि और भारतीय आध्यात्मिक चेतना
- अष्टांग योग का सांस्कृतिक एवं नैतिक आयाम
- योगसूत्र में वर्णित क्लेश सिद्धांत और आधुनिक जीवन
- योगसूत्र और मानसिक स्वास्थ्य
- पतंजलि योग और भारतीय जीवन-मूल्य
- योगसूत्र में समाधि-पाद का दार्शनिक विश्लेषण

महाभाष्य का भाषाशास्त्रीय महत्व

1. पाणिनि – कात्यायन – पतंजलि की व्याकरण परंपरा का समन्वित अध्ययन
2. महाभाष्य में वर्णित शब्द-शक्ति और अर्थ-विज्ञान
3. संस्कृत भाषा संरक्षण में पतंजलि का योगदान
4. महाभाष्य और आधुनिक भाषाविज्ञान

आयुर्वेद आधारित शोध विषय

1. पतंजलि और आयुर्वेद परंपरा का ऐतिहासिक विश्लेषण
2. योग और आयुर्वेद का समन्वित स्वास्थ्य मॉडल
3. त्रिदोष सिद्धांत और योग अभ्यास
4. आयुर्वेदिक जीवनशैली और योगसूत्र का संबंध
5. शरीर-मन-आत्मा की समग्र चिकित्सा में पतंजलि का योगदान

समन्वित (Interdisciplinary) शोध विषय

1. व्याकरण, योग और आयुर्वेद में 'शुद्धि' की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन
2. पतंजलि के दर्शन में नैतिकता और सामाजिक चेतना
3. भारतीय संस्कृति में योग-साधना की भूमिका
4. पतंजलि और भारतीय शिक्षा-दर्शन
5. पतंजलि का समग्र मानव विकास मॉडल
6. नई शिक्षा नीति और पतंजलि का ज्ञान-दर्शन
7. आधुनिक तनावग्रस्त समाज में योगसूत्र की प्रासंगिकता
8. वैश्विक स्तर पर पतंजलि योग की स्वीकार्यता
9. भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण में पतंजलि की भूमिका

शोधपत्र आमंत्रण (Call for Papers)

शोधपत्रों को उपयुक्त विषयों पर स्वीकार किए जायेगे,चयनित शोधपत्रो को संगोष्ठी में प्रस्तुत करनेका अवसर प्रदान किया जायेगा |

सार(ABSTRECT): 250-300 शब्द

पूर्ण शोध –पत्र: 2500-3000 शब्द

पूर्ण शोध –पत्र: 25-3-2026 तक निम्मलिखित ईमेलआई डी पर भेजे ;

hodyoga@gujaratvidyapith.org

भाषाएँ: अंग्रेजी/हिन्दी/गुजराती/संस्कृत

प्रेषण के दिशा निर्देश (Submission Guidelines)

कागज का आकार: A4

लाइन स्पेसिंग (LineSpacing):1.5

फ्रोन्ट :Times New Roman/एरियल यूनिकोड या मंगल/श्रुति/कोकिला

शीर्षक:14 PT.मुख्य पाठ;12 PT

संदर्भ शैली: MLA/APA

केवल मौलिक एवं अप्रकाशित शोध पत्र स्वीकार्य |

पंजीकरण विवरण (Registration Details)

पंजीकरण शुल्क:

छात्रो के लिए: 200 रु /-

(गूजरात विद्यापीठ के बहार के छात्रो के लिए)

पी. एच् डी. छात्र (शोध पत्र प्रस्तुतकर्ता) के लिए: 300 रु /-

अध्यापकश्री (शोध पत्र प्रस्तुतकर्ता)) के लिए: 500 रु /-

सम्मेलन में सहभागिता ओनलाईन पंजीकरण के माध्यम से होगी |

कृपया निम्मलिखित चरणों का पालन करे-

निचे दिए गए लिंक पर क्लिक कर पंजीकरण फॉर्म भरे | सभी विवरण भरने के बाद फॉर्म को अंतिम रूप से सबमिट करे |

संगोष्ठी में भाग लेने वाले प्रतिभागियों के भोजन व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जाएगी|

महत्वपूर्ण तिथिया (Important Details)

सार (Abstract) एवम पंजीकरण की अंतिम तिथि: 25.3.2026

पूर्ण शोधपत्र की अंतिम तिथि: 25.3.2026 स्पोर्ट रजिस्ट्रेशन नही रहेगा

पंजीकरण लिंक: https://web.gujaratvidyapith.org/activity/nsyog-032026/

मुख्य संरक्षक (Chief Patron)

डॉ. हर्षद पटेल
कुलपति,
गूजरात विद्यापीठ,अहमदाबाद

संरक्षक

डॉ. हिमांशु पटेल
कुलसचिव, गूजरात विद्यापीठ

सलाहकार समिति

डॉ राजेश व्यास
प्रोफ़ेसर,
SPT आर्ट्स एंड साइंस कोलेज गोधरा

डॉ डाह्या भाई पटेल
डीन श्री,
शिक्षण विद्या शाखा, गूजरात विद्यापीठ

श्री मेघना बा जाला
आचार्य,
आनंद निकेतन विद्यालय

श्री राजेन भाई चौहाण
संयोजक,
संस्कृत भारती

डॉ. श्रीधर व्यास
नियामक श्री,
ब्रम्हचारी वाडी, संस्कृत संस्थान

आयोजन समिति

नितिन ढाढोदरा, सहायक प्राध्यापक

श्री वर्षा जोषी, सहायक प्राध्यापक | **डॉ मीनल पंचाल,** सहायक प्राध्यापक

निमंत्रक

(आयोजक सचिव)

डॉ बिमान पॉल, योग विद्या विभाग, शिक्षण विद्या शाखा, गूजरात विद्यापीठ

कार्यक्रम की रूपरेखा

दिनाँक: 28-3-2026 (सुबह 9.00 से शाम 7.30 तक)

समय	सत्र	वक्ता / विषय
9.00 से 10.00:	पंजीकरण	-
10.00 से 11.30:	उद्घाटन समारोह	हीरक महोत्सव हॉल
11.30 से 12.30:	मुख्य उद्बोधन व्याख्यान -1	डॉ श्रीधर व्यास (नियामक श्री ब्रह्मचारी वाडी,संस्कृत संस्थान)
12.30 से 1.15:	व्याख्यान - 2	डॉ. मनन अग्रवाल (सहायक अध्यापक,संस्कृत यूनिवर्सिटी,सोमनाथ) विषय- महर्षि पतंजलि: योग के संस्थापक
1.15 से 2.30:	भोजन (गू. वि. केनटीन)	-
2.30 से 3.15:	व्याख्यान -3	डॉ. जय उपाध्याय (सरकारी चिकित्सा अधिकारी,आयुर्वेद,आंणद) विषय: पतंजलि और आयुर्वेद परंपरा का ऐतिहासिक विश्लेषण
3.15 से 4.00:	व्याख्यान -4	प्रो. बिमान पाल (विभागीय अध्यक्ष, योगविद्या विभाग) विषय: पतंजलि योग और भारतीय जीवन मूल्य
4.00 से 4.30:	चाय विराम	-
4.30 से 6.30:	शोध पत्र प्रस्तुतीकरण	-
6.30 से 7.30:	भोजन (गू. वि. केनटीन)	-

दिनाँक: 29-3-2026 (सुबह 8.00 से दोपहर 2.30 तक)

समय	सत्र	वक्ता / विषय
8.00 से 9.00:	शांति यज्ञ एवं महर्षि पतंजलि पूजन	-
9.00 से 10.00:	अल्पाहार	
10.00 से 10.50:	व्याख्यान -5	डॉ. कलापिनी अगस्ति (डीन भारतीय दर्शन, धर्म एवं संस्कृति संकाय कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक, महाराष्ट्र) विषय - भारतीय ज्ञान परम्परा और सांस्कृतिक चेतना के परिप्रेक्ष में पतंजलि योग सूत्र की समन्वित अंतर्दृष्टि
10.50 से 11-40:	व्याख्यान - 6	डॉ. स्वाति शाह (सहायक प्राध्यापक एल, आर, वालिया आर्ट्स और पी,आर महेता कोमर्स कोलेज, भावनगर) विषय – महर्षि पतंजलि का आयुर्वेद में योगदान
11-40 से 12-30:	पेनल डिस्कशन	महर्षि पंतजलि: एक बहुमुखी प्रतिभा पैनलिस्ट: 1. डॉ. कलापिनी अगस्ति 2. डॉ. स्वाति शाह 3. डॉ. श्रीधर व्यास
12.30 से 1.30:	समापन समारोह	-
1.30 से 2.30:	भोजन	-